विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

सड़क दुर्घटनाएं

यातायात मार्गों पर अराजकता की स्थिति राजस्थान में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए परिवहन विभाग ने अपना नाम परिवहन विभाग और सड़क सुरक्षा जरूर रख लिया है मगर प्रदेश में आये दिन सड़क दुर्घटनाओं का ग्राफ लगातार बढ़ता ही जा रहा है। राजस्थान में प्रति वर्ष तीस हजार से अधिक सड़क दुर्घटनाएं हो रही है जिनमें युवा सर्वाधिक शिकार हो रहे हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में इन दिनों सड़क हादसों के बादल मंडरा रहे है। प्रदेश की राजधानी हादसों का मुख्य केंद्र बनी हुई है। सड़क हादसों में जयपुर पूरे भारत में अग्रणी है। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक प्रतिदिन इसकी चपेट में आ रहे हैं। यातायात मार्गों पर अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। दो पहिया हो या चार पहिया किसी को भी जिंदगी की परवाह नहीं है। एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है। यातायात नियमों की सरेआम धज्जियाँ उड़ रही है। नियमों की पालना नहीं होने से दुर्घटनाओं के अम्बार लग रहे है। सड़क दुर्घटनाओं से अखबार भरे रहते हैं।

राजधानी के यातायात मार्ग तो जाने-अनजाने मौत के मार्ग बन गये हैं। सबसे बुरी स्थिति टोंक रोड पर बी-2 बाईपास, शिवदासपुरा, पावटा, जे.एल.एन. मार्ग पर ओ.टी.एस. चैराहा, जगतपुरा पुलिया, झालाना मार्ग, अजमेर रोड, न्यू सांगानेर रोड, सिरसी रोड, भांकरोटा, राजापार्क में गोविन्द मार्ग, अजमेरी गेट, विश्वविद्यालय मार्ग, घाट की गुणी की आदि की है।

प्रदेश में सड़कों की बदहाल स्थिति में अतिक्रमण, अवैध कब्जों और यातायात की बिगड़ी व्यवस्था ने कोढ़ में खाज का काम किया है। विशेष कर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में सड़कें अतिक्रमण के कारण सिकुड़ कर रह गई हैं। राजधानी जयपुर सहित इस समय प्रदेश के सभी मेट्रो सिटी यातायात की सुचारू व्यवस्था नहीं होने से आम आदमी परेशानी को झेल रहा है। राजधानी में परकोटे की स्थिति सबसे खराब है। परकोटे के मुख्य बाजारों किशनपोल, त्रिपोलिया, जौहरी बाजार, रामगंज बाजार, छोटी-बड़ी चैपड़ की स्थिति किसी से छिपी नहीं है।

वाहनों के बढ़ जाने के कारण और सड़कों पर अतिक्रमण के फलस्वरूप यहाँ ट्रैफिक की व्यवस्था बुरी तरह बिगड़ गई है। अतिक्रमण और अवैध कब्जों ने इन बाजारों की शांति का जैसे किसी ने हरण कर लिया है। ऑपरेशन पिंक के दौरान अवैध कब्जे और अतिक्रमण को हटाकर आम नागरिक को राहत दी गई थी मगर अब फिर से अतिक्रमण की पुरानी स्थिति बहाल होने से आम आदमी आहत है। एक बार फिर राजधानी अतिक्रमणकारियों के कब्जे में है। लोग चार पहिया वाहन लेकर जाने में डरने लगे हैं।

जानलेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे। नगर निकायों और एजेन्सियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिये। घटिया निर्माण पर तुरन्त कार्यवाही हो।

सड़क दुर्घटनाओं के ग्राफ में तेजी से वृद्धि हो रही है। सड़क दुर्घटनाओं से अखबार भरे रहते हैं। दुर्घटनाओं में मौतें और घायल होने के समाचार प्रतिदिन पढ़ने और देखने को मिल रहे हैं। भारत में सबसे अधिक लोग सड़क दुर्घटनाओं में मर रहे हैं। भारत में हर साल लगभग 1.4 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं, जबकि लाखों की संख्या में लोग घायल हो जाते हैं और हजारों जीवन भर के लिए विकलांग भी हो जाते हैं। इन दुर्घटनओं में होने वाली मौतों में 33 प्रतिशत 15 से 24 साल के आयु वर्ग के युवा हैं।

सड़क हादसों के मामलों में राजस्थान का देश में आठवां तथा इन हादसों में मरने वालों की संख्या के लिहाज से पांचवें स्थान पर है। देश में सड़क हादसों में रोजाना 415 लोगों की जान जाती है। हर साल 4.50 करोड़ सड़क हादसे होते हैं। इनमें डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती है और साढ़े चार लाख लोग घायल होते हैं। जानकारों का कहना है सड़क हादसों में होने वाली मौतों की तादाद सरकारी आंकड़ों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। दूर-दराज के इलाकों में होने वाले हादसों की अक्सर खबर ही नहीं मिलती। देश में लॉकडाउन के दौरान सड़क हादसों में रिकॉर्ड कमी दर्ज की गई थी, पर अनलॉक के बाद से दोबारा सड़क हादसों में तेजी आ गई है।

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, आम जनता में खासतौर से नये आयु वर्ग के लोगों में अधिक जागरुकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरुकता आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा गया है। सड़क दुर्घटना, चोट और मृत्यु आज के दिनों में बहुत आम हो चला है। सड़क पर ऐसी दुर्घटनाओं की मुख्य वजह लोगों द्वारा सड़क यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा उपायों की अनदेखी है।

गलत दिशा में गाड़ी चलाना, सड़क सुरक्षा नियमों और उपायों में कमी, तेज गति, नशे में गाड़ी चलाने आदि। सड़क हादसों की संख्या को घटाने के लिये उनकी सुरक्षा के लिये सभी सड़क का इस्तेमाल करने वालों के लिये सरकार ने विभिन्न प्रकार के सड़क यातायात और सड़क सुरक्षा नियम बनाये हैं। हमें उन सभी नियमों और नियंत्रकों का पालन करना चाहिये जैसे रक्षात्मक चालन की क्रिया, सुरक्षा उपायों का इस्तेमाल, गति सीमा को ठीक बनायें रखना, सड़क पर बने निशानों को समझना आदि।

जानलेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे। नगर निकायों और एजेन्सियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिये। घटिया निर्माण पर तुरन्त कार्यवाही हो तथा यातायात और ट्रैफिक की वर्तमान स्थिति में जनभावनाओं के अनुरूप सुधार हो। आम आदमी को राहत प्रदान करने के लिए निर्माण कार्यों में पारदर्शिता का होना अत्यावश्यक है।

–अतिथि संपादक
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल गुरूवार 20 जनवरी, 2022

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, अश्लेषा नक्षत्र प्रात: 8:24 तक, आयुष्मान योग दिन 3:44 तक, गर करण प्रात: 8:05 तक, चन्द्रमा आज 8:24 पर सिंह राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-धनु, बुध-मकर, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

आज भद्रा रात्रि 8:48 से शुक्रवार प्रात: 8:52 तक रहेगी। सायन कुम्भ में शनि प्रवेश प्रात: 8:09 पर करेगा। आज द्वितीया तिथि की वृद्धि हुई है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:40 तक, चर 11:18 से 12:38 तक, लाभ-अमृत 12:38 से 3:16 तक, शुभ 4:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:55

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ने का भय बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में परिचितों के सहयोग मिल सकता है।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यक्तिगत व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

सामाजिक न्याय प्राप्ति में बाधाऐं

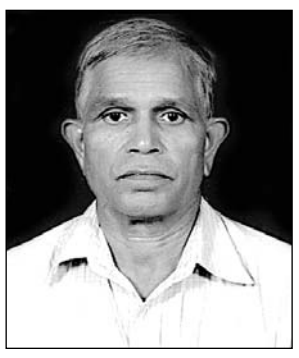

यादरामसिंह यादव

भारत में सामाजिक न्याय की अवधारणा पर पिछले कुछ वर्षों से मंडरा रहे खतरों ने चिन्तित कर रखा है। ये खतरे सामाजिक न्याय के विरोधियों की ओर से भी हैं और आंतरिक भी हैं। सबसे बड़ा खतरा इस अवधारणा के संकुचन का है। सामाजिक न्याय का अर्थ उन सभी व्यक्तियों को जाति, नस्ल, रंग, लिंग, धर्म आदि भिन्नताओं के कारणों से शक्ति के स्त्रोतों अर्थात आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक आदि से दूर धकेले गये तबकों को न्याय उपलब्ध करवाना है, जिन्हें किसी भी प्रकार के वर्चस्व के कारण अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। सामाजिक न्याय अपने मूल रूप में विशेषाधिकार आधारित योग्यतावाद के विरुद्ध एक निरन्तर संघर्ष है। जीवन के हर क्षेत्र में सभी को समान अवसर की उपलब्धता के लिए संघर्ष व सामाजिक विविधता का सिद्धान्त-इस संघर्ष के अस्त्र-शस्त्र हैं। सामाजिक न्याय का अर्थ आज लोग वंचित तबकों को राजनीति में आरक्षण से चुनाव जीत लेना एवं सरकारी व निजी क्षेत्रों की नौकरियों में आरक्षण से लगाते हैं। इसे ही सामाजिक न्याय की लड़ाई का अन्तिम छोर मानते हैं।

सामाजिक न्याय का सपना तो सभी प्रकार के भेदभाव से रहित समाज का सपना है। इस अर्थ में महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, सन्त कबीर एवं काल-मार्क्स की भावनाओं का विस्तार है। किन्तु भारतीय समाज की वर्चस्ववादी शक्तियाँ चाहती हैं कि यह लड़ाई इसी संकुचित रूप में सिमटी रहे और उनके अधीन विभिन्न प्रकोष्टों में चलती रहे। भारत में सामाजिक न्याय का संघर्ष मुख्य रूप से द्विजों और शूद्रों-अतिशूद्रों व आदिवासियों के बीच है। जिसमें द्विज अल्पसंख्यक है, जबकि शूद्र-अतिशूद्र आदिवासी बहुसंख्यक हैं। राजनीतिक पार्टियाँ अपने संगठन में ओबीसी प्रकोष्ठ, दलित-प्रकोष्ठ, आदिवासी प्रकोष्ठ आदि रखती हैं। यह बहुजन तबकों के संघर्ष को प्रकोष्ठों में बन्द करने का तरीका है। जब बहुजन समुदाय उनके प्रकोष्ठों में बन्द हो जाते हैं, तो स्वत: ही अल्पसंख्यक द्विज भारतीय राजनीति की मुख्यधारा बन जाते हैं।

बहुजन शब्द 'बुद्ध' के सूत्र वाक्यक 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' से आया है। इसका अर्थ है, अधिकतम लोगों के हित के लिए हो। कोई किसी पर वर्चस्व स्थापित ना करे। जबकि बहुसंख्यकवाद का अर्थ है, बहुसंख्यक लोगों का अल्प संख्यकों पर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक वर्चस्व व उनकी संस्कृति का हरण। हिन्दुत्व की राजनीति अपने मूल रूप में यही करने की कोशिश करती है। हालांकि हिन्दुस्तान में वास्तव में हिन्दुत्ववाद से अधिक मजबूत ब्राह्मणवाद की राजनीति रही है। जो कि वास्तव में अल्पसंख्यकवाद है, ना कि बहुसंख्यकवाद। सामाजिक न्याय की अवधारणा में हमें दोनों अतियों से बचना होगा। इसे उस अंतिम समुदाय और अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचाना होगा जिसे किसी कारण से वंचना झेलनी पड़ी है।

विश्व के सबसे अमीर लोगों की सूची में भारतीयों की संख्या निरन्तर बढती जा रही है जो कई वर्षों से अखबारों एवं मीडिया की सुर्खिया बन रही हैं। किन्तु भारत के अमीर लोगों की सूची में ना कोई ओबीसी है, ना कोई दलित है, ना कोई आदिवासी है और ना ही कोई मुसलमान। दलित चैम्बर ऑफ कॉमर्स (डिक्की) के उद्योगपतियों की हैसियत इनकी तुलना में कुछ भी नहीं है। वहां तो वे पहाड़ के नीचे खड़े ऊंट की तरह ही दिखेंगे। बहुजन समुदाय के पास इतनी राजनीतिक जीतों के बावजूद भी किसी व्यक्ति के पास कोई अखबार या टी.वी. चैनल नहीं है जिसे 'मुख्यधारा' कहा जा सके। इस बड़े सवाल का उत्तर है कि बहुजन समाज के किसी व्यक्ति की इतनी हैसियत नहीं है, जिससे 'मुख्यधारा' के अखबारों व टी.वी. चैनलों का मुकाबला कर सकें। फिलहाल इस मामले में हमें भारत में 'बहुजन डायवर्सिटी मिशन' के संस्थापक एच.एल. दुषाद से सहमत होना होगा कि सत्ता के सभी केन्द्रों और सभी प्रकार के संसाधनों के मालिकाना हक में सामाजिक विविधता ही सामाजिक न्याय का कारगर उपाय है। आरक्षण उस दिशा में चलने के लिये जरूरी शुरूआती कदम है। लेकिन जरूरत यह है कि हम पहली मंजिल पर ही ना रुक जावें बल्कि आगे के रास्तों पर भी नजर रखें।

सामाजिक न्याय प्राप्ति की त्रासदी के रूप में देश में वर्ण व्यवस्था द्वारा भारतीय समाज सदियों से परिचालित होता रहा है। वह व्यवस्था दुनिया की सर्वाधिक अन्यायकारी व्यवस्था है और इसी के कारण देश में सामाजिक अन्याय का सबसे शर्मनाक अध्याय लिखा गया है। शक्ति के स्त्रोंतों के असमान बंटवारे की नीति दूरगामी उद्देश्य से विदेशी मूल के मनीषियों (आर्यों) द्वारा जारी रखी। इसमें अध्ययन-अध्यापन, पौरोहित्य, राज्य संचालन, सैन्य वृत्ति, व्यवसाय एवं वाणिज्यिक इत्यादि के अधिकार सिर्फ द्विज वर्ग के अधिकार में रहे। चूंकि इसमें वर्ण एवं जाति व्यवस्था की कठोरता थी। इसीलिए सारे पेशे कर्म/जाति/वर्ण-सूत्र से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहे। इसी से वर्ण व्यवस्था ने एक आरक्षण व्यवस्था का रूप ले लिया था जिसमें दलित-आदिवासी-पिछडे और महिलाओं को शक्ति के सभी स्त्रोतों से पूरी तरह बहिष्कृत करके चिरकाल के लिए पंगु बना दिया गया। जिनके लिए आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक व शैक्षणिक गतिविधियाँ, धर्म आधारित विद्वानों से पूरी तरह निषिद्ध थी। यही नहीं लोग उनकी छाया तक से दूर रहते थे, ऐसी स्थिति दुनिया के किसी भी मानव समुदाय की कभी नहीं रही। बाबा साहब अम्बेड़कर द्वारा संविधान में लागू किया गया आरक्षण और कुछ नहीं बल्कि जाति, नस्ल, रंग, लिंग व धर्म आदि के भेदभाव के कारण शक्ति के स्त्रोतों से जबरन वंचित किये गये लोगों को कानून की ताकत से शक्ति के स्त्रोतों पर हक दिलाने का अचूक औजार है जो परिवर्तीकाल में दलित-पिछड़ों को सामाजिक अन्याय से उबारने में काफी कारगर सिद्ध हुआ। जिन दलितों के लिए स्कूल की पढाई करने का कल्पना करना दुष्कर था वे झुण्ड के झुण्ड विधायक, सांसद, कलेक्टर, एस.पी., एस.डी.एम., डॉक्टर, इंजीनियर व न्यायाधीश आदि बनकर देश की मुख्यधारा से जुडने लगे हैं।

अम्बेडकरी आरक्षण का प्रयोग, अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मलेशिया व आयरलैण्ड ने अपने देशों के जन्मजात वंचितों को शक्ति के स्त्रोतों में उनकी वाजिब हिस्सेदारी देने के लिए किया। जिससे दुनिया के वंचितों को वाजिब हिस्सेदारी मिलने से चमत्कारिक परिवर्तन आया। इसके आधार पर डॉ. अम्बेडकर को सामाजिक न्याय का चैम्पियन कहा जाता है। बहरहाल संविधान द्वारा सामाजिक अन्याय के शिकार बनाये गये लोगों के हित में तरह-तरह के प्रावधान किये जाने से कुछ लोगों के जीवन में चमत्कारिक सुधार जरूर आया है। किन्तु शक्ति के स्त्रोतों पर उनका हक नाम मात्र का ही प्राप्त हुआ है। राजनीति में भले ही हिस्सेदारी हो, किन्तु व्यापार, उद्योग, मीडिया, उच्च शिक्षा आदि से आद भी पूरी तरह बहिष्कृत हैं। आज भी देश के 8-10 प्रतिशत उच्च वर्ण के परम्परागत, विशेषाधिकार युक्त, सुविधा सम्पन्न वर्ग का शक्ति के स्त्रोतों पर 80-85 प्रतिशत कब्जा है। इस कारण आर्थिक और सामाजिक गैरबराबरी जो मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या है जो भारत में अभी भी कायम है।

इस विषय में क्रेडिट सुईसे एजेन्सी की वैश्विक धन बंटवार की जारी छंटवीं रिपोर्ट में लिखा है कि सामाजिक आर्थिक न्याय के सरकारों के तमाम दावों के बावजूद भारत में आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ रही है। रिपोर्ट के मुताबिक 2000-2015 के बीच पन्द्रह वर्षों में जो कुल राष्ट्रीय धन पैदा हुआ उसका 81 प्रतिशत शीर्ष की दस फीसदी आबादी विशेषाधिकार युक्त वर्ग के पास गया, शेष 19 प्रतिशत धन 90 फीसदी जनता के पास आया। जिसमें नीचे की आधी 50 प्रतिशत आबादी के पास 4.1 प्रतिशत ही धन आया है। गैर बराबरी अक्सर समाज में राजनीतिक उथल-पुथल की वजह से बनती है। सरकार एवं राजनीतिक पार्टियों को इस समस्या को गंभीरता से लेना चाहिए। यह सवाल सर्वाधिक महत्व का हो गया है कि स्वाधीन भारत में आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक न्याय के विविध उपायों के बावजूद भी सामाजिक अन्याय की धारा आज भी पूर्ववत जारी है। समाज में असहिष्णुता तथा दलित वंचितों, महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं आत्महत्या करने के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। बेरोजगारी सिरसा के मुँह की तरह बढ़ती जा रही है।

इसके लिए बेहतर होगा कि आर्थिक, सामाजिक गैर बराबरी को सबसे गम्भीर समस्या मानते हुए हम सारी ताकत, शक्ति के स्त्रोतों के पुनर्वितरण पर लगायें। दुनिया के अनेक महापुरूषों ने इसी को इंसानियत की सबसे बड़ी समस्या बताया है। बाबा साहब अम्बेडकर ने भी संविधान सभा द्वारा स्वीकार करते समय 25 नवम्बर, 1949 को आर्थिक और सामाजिक विषमता को राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या बताते हुए उसे शीघ्र से शीघ्र समाप्त करने का आह्वान किया था। सामाजिक न्याय प्राप्ति के रास्ते पर आर्थिक व सामाजिक विषमता को समाप्त करने में परम्परागत व्यवस्थाऐं सबसे बड़ी बाधा हैं, उनको समाप्त किये बिना सामाजिक न्याय प्राप्ति का सपना अधूरा रहेगा। दुनिया के तमाम शासक शक्ति के स्त्रोतों में सामाजिक और लैंगिक विविधता का असमान वितरण कराके मानव जाति की सबसे बड़ी समस्या को जन्म देते रहे हैं। ऐसे में यदि सामाजिक अन्याय को खत्म कर सामाजिक समूहों सवर्णों, ओबीसी/एससी/एसटी और धार्मिक अल्पसंख्यकों के लोगों की जनसंख्या के अनुपात में बंटवारा करना चाहिए।

यदि सरकारें इसे नहीं माने एवं लागू नहीं करें तब पूना पैक्ट में 24 सितम्बर, 1932 के दिन दलित-वंचितों से छीने गये पृथक निर्वाचन का अधिकार दिया जावे तभी हम वैधानिक रूप से अपनी जनसंख्या के अनुपात में आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक क्षेत्रों में संसाधनों का बंटवारा हासिल कर सकते हैं। अन्यथा तो देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को शक्ति के स्त्रोतों से वंचित वर्ग मजबूर होकर धराशाही कर सकते हैं।

–यादरामसिंह यादव,
अधिवक्ता एवं लेखक

अजमेर में 75 घंटे लगातार कार्य करते हुए महावीर सर्किल की कायापलटी

अजमेर, (कासं)। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा 75 घंटे लगातार कार्य करते हुए महावीर सर्किल की कायापलट की गई। स्मार्ट सिटी सहित नगर निगम, अजमेर विकास प्राधिकरण, जनस्वस्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, टाटा पावर और डीओआईटी ने संयुक्त रूप से तालमेल बैठाते हुए महावीर सर्किल ट्रेफिक जंक्शन का कार्य तय समय में पूरा किया गया है। बुधवार को कार्य पूर्ण होने के बाद मेयर बृजलता हाड़ा, जिला कलैक्टर एवं अजमेर स्मार्ट सिटी के मुख्य कार्यकाकारी अधिकारी अंशदीप, जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मी, नगर निगम आयुक्त व अजमेर स्मार्ट सिटी के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी देवेंद्र कुमार, एडीए आयुक्त अक्षय गोदारा सहित अन्य अधिकारियों ने जायजा लिया और कार्य की सराहना की।

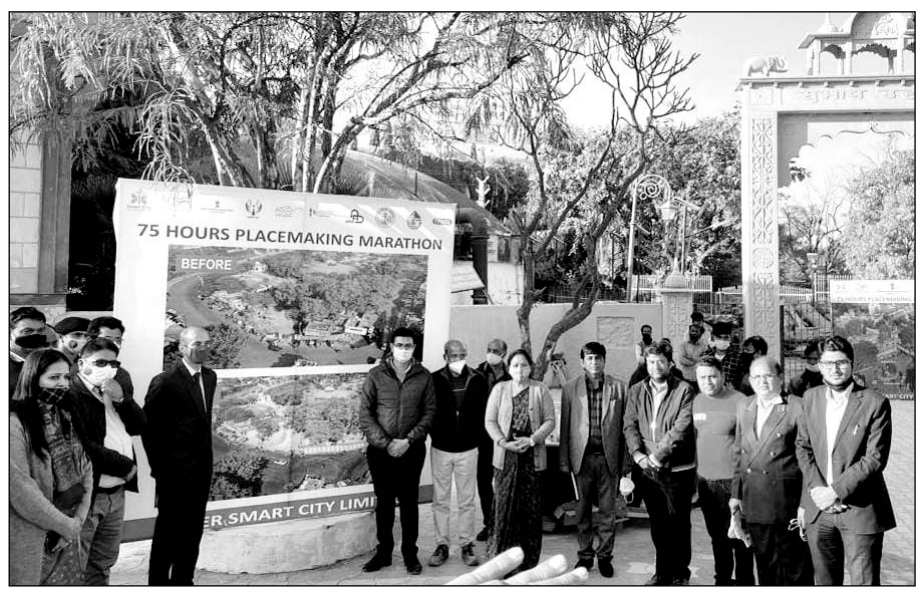

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत अजमेर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा 75 घंटे लगातार कार्य करते हुए महावीर सर्किल की कायापलट की गई।

देश की आजादी के 75 वें वर्ष पर अमृत महोत्सव के तहत स्मार्ट सिटी मिशन द्वारा 15 जनवरी 2022 से प्लेस मेकिंग मैराथन कार्यक्रम का आयोजन देश भर में किया जा रहा है। इसी कड़ी में 75 घंटे के भीतर महावीर सर्किल के ट्रेफिक जंक्शन को इम्प्रूव किया गया। रविवार सुबह 9 बजे से कार्य आरंभ हुआ। विभिन्न विभागों ने आपसी मालमेल बैठाते हुए हाईटेंशन लाइन को अंडरग्राउंड किया, यूनिपॉल और सीसीटीवी कैमरों को शिफ्ट करते हुए करते हुए जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग कमरों को तोड़ा गया। इसके समानान्तर दीवार का कार्य आरंभ करते हुए इस कार्य को पूर्ण किया और फॉयसागर फिल्टर प्लांट को पीएस नंबर 8 से जोड़ा गया। अंतिम दिन रोड इत्यादि निर्माण पूर्ण करते हुए सुभाष उद्यान के बाहर पेवर ब्लॉक लगाए गए। मौके पर सीवरेज कार्य कर सुलभ शोचालय का आउट लेट जोड़ा गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 75 घंटे में महावीर सर्किल को इम्प्रूव किया गया। रविवार सुबह 9 बजे से कार्य आरंभ किया गया था। 19 जनवरी दोपहर 12 तक कार्य को तय समय सीमा में पूर्ण किया गया। मौके पर 780 वर्ग मीटर अतिरिक्त खाली स्थान मिला है। इसमें से कुछ हिस्सा सड़क को चौड़ा करने एवं अन्य उपयोग में काम में लिया जाएगा।

■ तीन मीटर से साढ़े सात मीटर सड़क की चौड़ाई होने से यातायात होगा सुगम

कार्य के दौरान यहां पर हाई टेंशन इलेक्ट्रिक पोल को हटाते हुए केवल को अंडरग्राउड किया गया है। पोल पर लगे सीसीटीवी कैमरों को पोल सहित शिफ्ट किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस कार्य को 75 घंटे के रिकॉर्ड समय पर पूरा करने के लिए विभिन्न विभागों के अधिकारियों सहित 150 से अधिक श्रमिक लगातार कार्य 24 घंटे लगातार कार्य किया। अजमेर में पहली बार लगातार काम करते हुए प्रोजेक्ट को पूरा किया गया। बाल भैरव मंदिर को डिवाइडर के मध्य लिया गया है। साथ ही सड़क को तीन मीटर से चौड़ा करते हुए साढ़े सात मीटर किया गया। सड़क चौड़ा होने के बाद यहां पर यातायात सुगम होगा और आए दिन लगने वाले जाम से छुटकारा मिलेगा, साथ ही यहां से गुजरने वालों को राहत भी मिलेगी। अजमेर स्मार्ट सिटी के अतिरिक्त मुख्य अभियंता अविनाश शर्मा ने इस कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण करने के लिए संबंधित विभागों का आभार जताया है।

अजमेर कलेक्टर ने चिकित्सालय का अवलोकन कर व्यवस्थाओं की जानकारी ली

अजमेर, (कासं)। जिला कलैक्टर अंश दीप ने बुधवार को जेएलएन चिकित्सालय का अवलोकन कर व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

जिला कलैक्टर अंशदीप ने जेएलएन मेडिकल कॉलेज के प्रींसीपल डॉ. बीर बहादुर सिंह के साथ जेएनएन चिकित्सालय का अवलोकन किया। उन्होंने चिकित्सालय में उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। मरीजों के उपचार के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया को समझा। उन्होंने चिकित्सालय के विभिन्न वार्डों का अवलोकन कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किए। साथ ही विकास कार्यों की समीक्षा की।

उन्होंने आपातकालीन चिकित्सा ईकाई का अवलोकन किया। यहां इमरजेन्सी की दशा में आने वाले मरीजों के उपचार की व्यवस्था को देखा। नई सीटी स्कैन मशीन तथा नए मेडिकल आईसीयू यूनिट का अवलोकन किया। आईसीयू में मरीजों को दी जाने वाली

■ मरीजों के उपचार के लिए अपनाई जाने वाली प्रक्रिया को समझा

सुविधाओं की जानकारी ली। चिकित्सालय में कार्यरत एमआरआई तथा कोविड वार्ड के बारे में भी जाना। चिकित्सालय में मेडिकल ऑक्सीजन की पर्याप्त उपलब्धता हर समय सुनिशि्चत करने के लिए निर्देशित किया गया।

स्मार्ट सिटी तथा अन्य एजेन्सियों के माध्यम से करवाए जा रहे विकास कार्यों की समीक्षा की। इन कार्यों को निर्धारित समयावधि में पूर्ण करवाने के लिए कहा। इन कार्यों की गति बढ़ाने के लिए कार्यकारी संस्था से निरंतर सम्पर्क में रहने के निर्देश दिए। इस अवसर पर कार्यवाहक अधीक्षक डॉ. श्याम भूतड़ा, डॉ. नीरज गुप्ता, नर्सिंग अधीक्षक सरोज कुमारी उपस्थित रहे।

जेएलएन अस्पताल का जिला कलैक्टर अंशदीप ने निरीक्षण किया।